



# पत्र-पुष्प



## निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनीं प्रति मधुर याद पत्र (8-10-14)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा प्रभु मिलन की अनुभूतियों में समाये हुए, संगमयुग के अलौकिक सुखों में रमण करने वाले, विश्व कल्याण की सेवा पर उपस्थित निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - मधुबन की अलौकिक रिमझिम में देश और विदेश का यह संगठन कितना प्यारा न्यारा है। सभी अपने प्राणप्यारे बाबुल से अव्यक्त मिलन मनाने के लिए भाग-भाग कर मधुबन पहुंच गये हैं। ऐसे लगता जैसे चारों ओर की नदियां सागर में समाने आ गई हैं। यह भी संगम के कितने सुहावने दिन हैं जो बाप और बच्चों का सम्मुख मिलन होता। बाबा अपने बच्चों की झोली अनेक वरदानों से भरपूर कर देते हैं। बाबा साकार में न होते भी निराकार और अव्यक्त रूप में हमारे साथ हैं और हमको भी सिखा रहे हैं बच्चे साकार शरीर में होते हुए भी निराकारी, निर्विकारी बन जाओ। जितना निराकारी बनेंगे उतना निर्विकारी, निरहंकारी बनते जायेंगे। बाबा ने बहुत बड़ा ज्ञान नहीं दिया, सिर्फ सिम्पल रहकर सैम्पुल बनना सिखाया है। बाबा ने जैसे यह नेचर बना दी बच्ची पास्ट इज पास्ट, बीती को चितओ नहीं, आगे की रखो न आशा... जो हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होने वाला है वह अच्छे से अच्छा होगा।

मीठे बाबा ने सच्चाई और प्रेम से पूरे विश्व की सेवा करवाई है। चारों ओर सभी बहुत प्यार से सेवायें कर रहे हैं। बाबा क्या करा रहा है और क्या कर रहा है! बाबा के बच्चे सेवाओं में बहुत खुश हैं। मैं आप सबसे पूछती - खुशी सेवा में है, खुशी याद में है, खुशी आपस में मिलने में है या खुशी ज्ञान के चिंतन में है? मनन-चिंतन-मंथन करने से ज्ञान अच्छा लगता है। जो बात दिल को अच्छी लगती है वही मन को भी अच्छी लगती है। फिर बुद्धि जब उस चिंतन की गहराई में जाती है तो मंथन हो जाता है। फिर वह ज्ञान रत्न बन जाते हैं। बाबा ने हमें तो यह गिफ्ट दिया है बच्ची, विचार सागर मंथन करो। विचार सागर मंथन करने से सुख मिलता इलाही है।

हम बाबा के बच्चे सिर्फ गोद में बैठने के लिए नहीं बने हैं। अच्छी पढ़ाई पढ़के गले की माला बनने के लिए बच्चे बने हैं। बाबा ने एडाप्ट करके गोद तो लिया, बच्चा गोद में ही बैठा रहे, ऊं..ऊं करता रहे, हाँ हूँ करके चिल्लाता रहे, बाबा को ऐसा बेबी बुद्धि वाला बच्चा नहीं चाहिए। हमें तो बाबा के गले की माला बनना है तो बाबा जैसा समझदार बनना है। गले की माला बनना भी बड़ी बात नहीं, एक दो के समीप आने से, स्नेह के धागे में पिरोने से 108 की माला में आ सकते हैं। बाबा कहते बच्ची तुम्हें तो 108 में नहीं, अष्ट रत्नों में आना है, सबके ईष्ट बनना है। बोलो, आप सब भी पुरुषार्थ में ऐसी ही रेस कर रहे हो ना! इसके लिए बाबा ने कहा बच्चे, रहमदिल भी बनना है, तो मास्टर दुःख हर्ता सुख कर्ता भी बनना है, मन-वचन कर्म की पवित्रता में नम्बरवन लेना है, फिर सिम्पल रहकर सैम्पुल बनना है। हर गुण हर शक्ति से स्वयं का श्रृंगार करना है। कमल फूल समान न्यारा प्यारा रहना है, मन्सा-वाचा-कर्मणा वरदान बनना है। ऐसी श्रेष्ठ धारणाएँ सर्व का ईष्ट बना देंगी। तो हर एक इन बातों का चार्ट

रखते सम्पन्न बनने की रेस करो। बाकी दीपावली का यादगार पर्व तो सभी खूब धूमधाम से मनायेंगे ही।

सबको दीपावली, नया वर्ष और भैया दूज की पद्मगुणा मुबारक हो।

अच्छा - सर्व को स्नेह भरी याद.....

ईश्वरीय सेवा में,  
वी.के. जानकी



## ये अव्यक्त इशारे



### अन्तिम पेपर में पास होने के लिए सामना करने की शक्ति धारण करो

1) जब कोई भी बात का साहस रखा जाता है तो कई बातें सामना करने के लिए आती हैं। साहस रखा और माया का सामना करना शुरू हो जाता है इसलिए सामना करने के लिए पहले से ही अपने में हिम्मत रखनी है। कोई भी परीक्षा किसी भी रूप में आये, परीक्षा को पास करने के लिए हाई जम्प देने का अभ्यास होगा तो कोई भी परीक्षा को पास कर लेंगे।

2) अभी अन्त के समय का भी अन्त है तो ईविल स्पिट वा ईविल संस्कार सब अति में सामना करेंगे फिर उनका अन्त होगा। किचड़ा सारा बाहर निकल कर भस्म होगा, इसलिए उन्हीं का सामना करने के लिए पहले अपनी समस्याओं से मुक्त रहो, इसके लिए बचत की स्कीम बनाओ और प्रैक्टिकल में लाओ तब अपना और सर्व आत्माओं का बचाव कर सकेंगे।

3) अन्तिम समय का सामना करने के लिए हर एक को चार शक्तियां धारण करनी हैं: 1- समेटने की शक्ति अर्थात् शार्ट करने की शक्ति, 2- समाने की शक्ति, 3- सहन करने की शक्ति, 4- सामना करने की शक्ति, लेकिन सामना बापदादा व दैवी परिवार का नहीं करना। माया की शक्ति का सामना करने की शक्ति धारण करो।

4) सफलता के सितारे बनने से सामना करने की शक्ति आती है। सफलता को सामने रखने से समस्या भी पलट जाती है और सफलता प्रैक्टिकल में हो भी जाती है। समीप सितारे जिसके समीप हैं उनके समान बनना है। समीप सितारों में बापदादा के गुण और कर्तव्य प्रत्यक्ष दिखाई देंगे।

5) नाजुक समय का सामना करने के लिए नाजुकपन छोड़ना है। अपनी स्वस्थिति पर पूरा ध्यान देना है। स्व स्थिति श्रेष्ठ है तो सर्व परिस्थितियों से पार हो जायेंगे। जब तक सूक्ष्म वा स्थूल कोई भी कामना है तब तक सामना करने की शक्ति नहीं आ सकती। कामना सामना करने नहीं देती इसलिये ब्राह्मणों के अन्तिम सम्पूर्ण स्वरूप का गायन है - इच्छा मात्रम् अविद्या।

6) अव्यक्त स्थिति में रहने का अभ्यास अब नेचुरल और नेचर बनाओ। जब यह स्थिति नेचर बन जायेगी तब नेचुरल केलेमिटीज़ शुरू होगी। नेचर न बनने के कारण यह नेचुरल केलेमिटीज़ रुकी हुई है क्योंकि अगर सामना करने वाले अपने स्व-स्थिति से उन परिस्थितियों को पार नहीं कर सकेंगे तो फिर वह परिस्थितियां आयेंगी कैसे! सामना करने वाले अभी तैयार नहीं हैं इसलिए यह पर्दा खुलने में देरी हो रही है।

7) समर्थ बाप साथ है इसलिए कोई भी बात मुश्किल नहीं है। सिर्फ एक बात सभी को ध्यान में रखनी है कि सामना करने के

लिए बीच में कामनायें विघ्न डालती हैं। इसके लिए जितना तृप्त बनेंगे उतना इच्छा मात्रम् अविद्या होंगे और कामना के बजाए सामना करने की शक्ति आयेगी। यदि कामना रहती है कि मेरा नाम हो, मैं ऐसा हूँ, मेरे से राय क्यों नहीं ली, मेरा मूल्य क्यों नहीं रखा! यह अनेक प्रकार की कामनाएं सामना करने में विघ्न रूप बनती हैं। तो याद रखना कि हमें कोई कामना नहीं रखनी है, माया का सामना करना है।

8) जैसे दिखाते हैं कि देवियों के सामने असुर विकराल रूप से सामना करने आते हैं, लेकिन उन्हीं के आगे जैसे बिल्कुल पशु अर्थात् बेसमझ बन जाते हैं। कितना भी बड़ा समझदार हो लेकिन आपके अनुभवीमूर्त और आत्मिक दृष्टि के सामने बिल्कुल ही अपने को बेसमझ समझेंगे।

9) स्नेह रूप में तो पास हो, अब अन्तिम स्वरूप है शक्ति का। कोई भी आत्मा आप लोगों के पास आती है तो पहले जगत-माता का स्नेह रूप धारण करते हो लेकिन जब वह चलना शुरू करते हैं और माया का सामना करना पड़ता है तो सामना करने में सहयोगी बनने के लिए शक्ति रूप भी धारण करना पड़े। जहाँ निमित्त बनी हुई आत्माएं सिर्फ स्नेह मूर्त हैं तो उन्हीं की रचना में भी समस्याओं को सामना करने की शक्ति कम होगी। यज्ञ वा दैवी परिवार के स्नेही, सहयोगी होंगे लेकिन सामना नहीं कर सकेंगे।

10) वर्तमान समय भोलेपन के कारण माया का गोला ज्यादा लग रहा है, इसलिए ऐसा शक्ति स्वरूप बनो जो माया सामना करने के पहले ही नमस्कार कर ले, सामना कर न पावे। बहुत सावधान, खबरदार-होशियार रहना है। अपनी वृत्ति और वायुमण्डल को चेक करो। कैसा भी वायुमण्डल हो लेकिन स्वयं की शक्तिशाली वृत्ति वायुमण्डल को परिवर्तन में ला सकती है, अगर वायुमण्डल का वृत्ति के ऊपर असर आ जाता है तो यही भोलापन है।

11) सुनने के बाद, हर बात समाने से समान बन जाते हैं और समाने से सामना करने की शक्ति स्वयं ही सहज आ जाती है। सामना करने की शक्ति से सर्व-कामनाओं से स्वतः ही मुक्ति प्राप्त हो जाती है। फिर किसी भी प्रकार का बन्धन अपनी तरफ आकर्षित नहीं कर सकता। ऐसा बन्धन-मुक्त ही योग-युक्त हो सकता है।

12) कई समझते हैं कि बाप तो अव्यक्त हो गया, व्यक्त में सामना करने वाले तो हम ही हैं। लेकिन आप भी अव्यक्त हो जाओ अर्थात् कोई भी सामने आये तो व्यक्त भाव की बात उन्हें दिखाई न दे या करने की हिम्मत न हो। औरों के भी व्यक्त भाव

को मिटाने वाले अव्यक्त फरिश्ते बन जाओ। ऐसी अव्यक्त-स्थिति का वायुमण्डल बनाओ तो हलचल समाप्त हो जायेगी।

**13)** अन्तिम पेपर के समय प्रकृति के सभी तत्व साथ-साथ और अचानक वार करेंगे। किसी भी प्रकार के प्रकृति के साधन बचाव के काम के नहीं रहेंगे और ही साधन समस्या का रूप बनेंगे। ऐसे समय पर प्रकृति के विकराल रूप का सामना करने के लिये अकाल-तख्त नशीन, अकालमूर्त बनने का अभ्यास चाहिए तभी महाकाल बाप के साथ-साथ मास्टर महाकाल स्वरूप में स्थित होकर सामना कर सकेंगे।

**14)** सागर में विशेष दो शक्तियाँ सदैव देखने में आती हैं—एक समाने की शक्ति, दूसरा सामना करने की शक्ति। लहरों द्वारा सामना भी करते हैं और हर वस्तु व व्यक्ति को स्वयं में समा भी लेते हैं। तो मास्टर सागर होने के कारण अपने में भी देखो कि यह दोनों शक्तियाँ मुझ में कहाँ तक, कितनी परसेन्टेज में आई हैं?

**15)** सामना करने की शक्ति ब्राह्मण परिवार के आगे यूज नहीं करनी है। वह माया के आगे यूज करनी है। परिवार से सामना करने की शक्ति यूज करने से संगठन पॉवरफुल नहीं होता। कोई भी बात अगर नहीं जंचती है तो भी एक-दूसरे का सत्कार करना चाहिए। उस समय किसी के संकल्प वा बोल को कट नहीं करना चाहिए इसके लिए समाने की शक्ति को धारण करो।

**16)** कोई भी विघ्न का सामना करने के लिये पहले परखने की फिर निर्णय करने की शक्ति चाहिए। जब निर्णय करेंगे कि यह माया है वा अयथार्थ है! फायदा है वा नुकसान, अल्पकाल की प्राप्ति है वा सदाकाल की! तो निर्णय के बाद ही सहनशक्ति को धारण कर सकेंगे। जिसकी निर्णयशक्ति तेज होती है वह कब हार नहीं खा सकता। हार से बचने के लिये अपने निर्णयशक्ति और परखने की शक्ति को बढ़ाओ।

शिवबाबा याद है ?

14-3-13

ओम् शक्ति

मधुबन

**“एसे अच्छे ज्वेलर बनो जो सच्चाई और प्रेम से हर आत्मा को पिघलाकर उसे सच्चा बना दो”**

(दादी जानकी)

एक सेकेण्ड अपने फरिश्तेपन की स्थिति में रहके देखो, उस समय बाबा शब्द निकलता है? ब्राह्मण हैं तो मुख वंशावली हैं, नूरे रत्न हैं। मैं समझती हूँ बाबा की मुरली सुनकर आप सबको फरिश्ता रूप बनने की धुन लगी होगी। यह बहुत-बहुत मीठा रूप है। बाबा को डायरेक्ट इतना प्यार नहीं कर सकते हैं, पर फरिश्ते रूप से प्यार का सबूत दे रहे हैं। मेरी भावना समझ रहे हो ना! मैंने देखा सभी भाषाओं वाले भावना को समझ गये हैं, भाषा कोई भी हो, सच्चाई और प्रेम वाली भावना हर एक खींच लेता है।

मैंने एक बारी कहा बाबा आप तो मुझे पिघला देते हो। हमको अन्दर ही अन्दर आपकी दृष्टि से, बोल से इतनी शक्ति मिल जाती है जो हम पिघल जाते हैं। (परिवर्तन हो जाते हैं) ज्ञान के पहले मैं एक सोनार के पास गई थी, वो सोने को कैसे पिघला रहा है वो देखा, वह सभी छोटी मोटी ज्वैलरी को एक साथ इतनी युक्ति से पिघला रहा था, जो बहुत बड़ी आग भी नहीं होती है, ऐसा पिघला रहा था, उनके पास एक कटोरी जैसी डाई होती है, जो सच्चा सोना है उसमें गरम गरम डाल देते हैं, तो वो सब मिला करके इतना-सा बढ़िया एक पीस हो जाता है। बाकी किचड़े को अलग कर देते हैं, यह देख करके मुझे अजब लगता था, जान बूझके मैं वो सब अच्छी तरह से देखती थी। पिघला करके सारा जो झूठ मिक्सचर है उसे अलग करके फिर उनसे सच्चा जेवर बनाते हैं, डायरेक्ट झूठे से सच्चा नहीं बना सकते हैं।

तो जब बाबा सुनाता है तो मेरा यह हाल हो जाता है, अभी भी मैं समझती हूँ, यह जो पुरुषार्थ का तरीका है ना सच्चा बनने का, मुझे सच्चा बनना है। उसके लिए बाबा से योग चाहिए, यह अग्नि ऐसी है जो अन्दर ही अन्दर पिघला (परिवर्तन) देती है। योग में किसको ऐसा अनुभव होता है? यह अनुभव करते हो? सच बताओ। तो योग ऐसा हो, हम साक्षी हों। जैसे कोई बड़ा व्यापारी होता है, वो अपने मैनेजर को ऐसा सिखाता है, जो वो अगर हाज़िर न भी हो तो भी वह एक्क्यूरेट कर लेवे। बड़े-बड़े बिजनेस वाले ऐसे करते हैं क्योंकि जो एक्क्यूरेट काम टाइम पर करता है, उसमें उनका विश्वास हो जाता है।

तो हिम्मत बच्चे मददे बाप की लिंक जुटी रहे, कोई भी हो, कुछ भी हो जाए, कैसी भी प्रॉब्लम हो, कुछ भी नहीं है, ऐसा लगेगा। सारी लाइफ में अन्त मते सो गते लिंक जुटी रहे, सच्ची दिल पर साहेब राजी, अन्त मते तक रहेगा। कभी भी हिम्मत से हार नहीं खानी है, हिम्मत छोड़ी माना हार खाई। सच्ची दिल पर साहेब राजी का जो रिलेशन कनेक्शन है उसका फायदा लो। ज्ञान सागर के ज्ञान से ज्ञान गंगा बन जाओ, तो कोई इसमें डुबकी लगावे (कोई हमारे नजदीक आवे) ना। तो उनका भी पाप नाश हो जावे, ऐसा डीप पुरुषार्थ हो।

गंगाजल का बहुत महत्व होता है इसलिए जो भी कोई हरिद्वार में जायेंगे वो गंगाजल का मटका भरके घर में ले आयेंगे। फिर

रोज के पानी में थोड़ा-थोड़ा गंगाजल डालके पीते रहेंगे। यह ज्ञानामृत है गंगाजल, रीयली अन्दर से लगता है, अगर मैं भी वो ग्लास भरके पीती हूँ ज्ञानामृत का, तो बड़ा मीठा, बहुत अच्छा लगता है, ताकत वाला है। तो ज्ञान, योग, धारणा की शक्ति से नेचुरल कोई भी बात चित्त मन में न रखो, किसकी भी न रखो, ऐसा कोई ग्रुप हो जो सारे विश्व को प्रेरणा देने वाला हो, तो मैं उनसे मिलना चाहूँगी। बाबा ने साकार मुरलियों में कहा है कि बाबा प्रेरणा नहीं देता है, बाबा पढ़ाता है अच्छी तरह से, क्योंकि क्या से क्या बनाना है, कहाँ शूद्र कहाँ ब्राह्मण! ऐसा बनाने के लिए बाबा ने कितनी मेहनत की है। पर हमको कहता है तुम्हारी जीवन का एक सैम्पल हो जो औरों को प्रेरणा मिले। बनाने वाला कौन है, कैसा बनाता है? दूसरों को अन्दर से प्रेरणा मिले कि मैं भी ऐसा बनूँ। उसमें फिर एक विधि है, बनना है किसको? इसमें नये जल्दी हाथ उठायेँगे क्योंकि नये देखते हैं कि मैं देरी से आया हूँ, मैं कर लूँगा। पर पुराने प्रेरणा देने वाले हैं। उनकी लाइफ एक मशाल की तरह ऐसी हो जो सबका ध्यान चला जाये। सिर्फ पुरानों को सोचने की आदत न हो। समय ऐसा है सिर्फ बनना मेरे को है, बनाने वाला है बाबा, बस यह बात कभी भूले नहीं, मुझे बनना है, बाबा बना रहा है और अब बनायेगा। अब नहीं तो कब नहीं, तो अब करना है, फिर इसके लिए भले रात को नींद फिट जाये।

बाबा को बहुत अच्छा लगता है, हमारे बी.के. लाइफ में अमृतवेले का महत्व जो जानते हैं वो बाबा को बहुत अच्छे लगते हैं। जब मैं लण्डन गई तो नये नये कहते थे कैसे उठेंगे 4 बजे, मैं कहती थी 4 बजे तुम्हारा तकिया हिलेगा क्योंकि यहाँ का वायुमण्डल ही ऐसा है। तो बरोबर तकिया हिल जाता था, यहाँ अमृतवेले कोई सो नहीं सकता। पता नहीं कोई सोता हो तो हो सकता है, पर जिनकी तकिया बाबा हिलाता है वो कैसे सो सकता है? कईयों को अमृतवेला बहुत अच्छा लगता है, हिम्मत बच्चे मददे बाप, सच्ची दिल पर साहेब राजी... मेरे को यह बात समझ में नहीं आती है, यह मेरे को अच्छा नहीं लगता है... क्या बोला? समझके बोलो।

ड्रामानुसार हमारे बाबा ने ऐसी ऊंची स्थिति बनाने का भाग्य दिया है, किसी को दृष्टि दिया, टोली दिया तो भी कहेंगे दो शब्द बोलो ना, तो उस घड़ी मुझे टचिंग आती है ऐसा बोलूँ जो दो शब्द उसको भूलें नहीं क्योंकि फालतू बात, पुरानी बात, कैसे संस्कारों वाली बात नहीं भूलते हैं, बार-बार रिपीट करते हैं और अच्छी बात भूल जाते हैं, यह बड़ी भूल है। तो कान खोलके सुनो और एक मिनट शान्त में बैठके सोचो तो सही ना! उसकी मनोवृत्ति से न खुद का भला, न औरों का भला। तो सारी बात है स्मृति, वृत्ति, दृष्टि... जो बात अन्दर स्मृति में रहती है, वो वृत्ति से दिखाई देती है, बड़ा सूक्ष्म पुरुषार्थ है।

यहाँ हमारा व्यवहार ऐसा हो जो मूलवतन क्या है, सूक्ष्मवतन कैसा है, वो पता पड़े। अन्दर सूक्ष्म में जा करके गहराई से पुरुषार्थ करना पड़ेगा। आकाश तत्व के पार सूक्ष्मवतन है, उसके

ऊपर मूलवतन है, वहाँ कोई आवाज नहीं है, सूक्ष्मवतन में मूवी है, इशारे हैं, सूक्ष्म है। बाबा ने कहा आत्मा सूक्ष्म है मन-बुद्धि-संस्कार, मन हो शान्त, तन हो शीतल, मुझे ऐसी दुनिया बनानी है। यह किसने सूक्ष्म में प्लान बनाया है, प्रैक्टिकल में लाने से बहुत फायदा हुआ है। तो शान्ति से, प्यार से किसी की समय पर सेवा करो तो बहुत अच्छा लगता है। वाणी से सेवा भी ऐसी जो बाबा ने सुनाया है वही सुनायेंगी और कोई बात मिक्सचर करके अपना भाषण नहीं करेंगी।

अगर दिल में कोई बात समाई हुई है तो बाबा की बात दिल में नहीं जाती है। उसमें समाने, समेटने की शक्ति नहीं होती है। वो न सन्तुष्ट रहता है, न कोई को सन्तुष्ट कर सकता है। समाने और समेटने वाले को कोई भी बात कभी सहन नहीं करना पड़ता है, ऑटोमेटिक सहन हो जाता है इसलिए कभी वो यह नहीं कहेगा कि मैं सहन करता हूँ या मुझे सहन करना पड़ता है। उसको सहयोग देने की शक्ति नेचुरल है, सहयोगी बनना और औरों को सहयोगी बनाना। कई ऐसे हैं जो शुरू से लेके सहयोगी बनके योगी बने हैं, कोई योगी बनके सहयोगी बने हैं, पर कोई योगी सहयोगी दोनों हैं तो वो सहजयोगी हैं। तो यह जो बातें रिपीट कर रही हूँ वो आप बुद्धि को क्लीन और क्लीयर करके धारणा में रखो तो नेचुरल हो जायेगा। क्या करें... का स्वभाव, अभी हमारी सिस्टम से खत्म हो जाये।

अभी शान्ति में रहने का समय है, दूर का मुसाफिर बाबा हम सबको साथ ले जाने के लिए आया हुआ है, तो हम तैयार रहें उनके साथ जाने के लिए। भाग्यशाली हैं जो साथ जा रहे हैं, भगवान मेरा साथी है, हम जा रहे हैं। आप भी चलो ना, भले चलो। और सब पूर्वजों को तो बुला लिया मेरे को क्यों बिठाया है? तो कहा तुमको ऐसे नहीं जाना है। सूक्ष्म मेरी भावना है कि सच्चाई, प्रेम के वायब्रेशन सारे विश्व को मिलें जो पिघल जायें, परिवर्तन आ जाये। जिसको यह बात जंचेगी वो खुशी में नाचेगा। कितने भी साल ज्ञान में हुए हों पर परिवर्तन क्यों नहीं है? उसने लोगों को अपने ही पीछे लटकाया है, बस उसके फॉलोअर होके चलें, अधीन बनाया है, जो वो कहे सो करना है। पहले उसका चिंतन करना है, अपनी भले दुर्गति हो जावे। नहीं। पहले हमको पिघलाना है। बाबा मुझे पिघला रहा है, पिघलाना भी उनका काम है फिर सच्चा जेवर बना करके दुनिया को दिखाना भी उसका काम है। अच्छा ज्वेलर बहुत अच्छे अच्छे जेवर बनाता है, मैं ऐसा अच्छा जेवर बनूँ जो बाबा को ऑर्डर मिलता रहे, जैसे इसको बनाया मैं भी बनूँगा। अच्छा, आओ बच्चा बनो और यह मौसम है, खैच रहा है कोई हमको डालके प्रेम की डोर, हम चले वतन की ओर... अब सबकी स्थिति ऐसी हो। यह मेरी भावना है, यह भाषा सहज है ना, सबको समझ में आ रही है ना!

जिसकी जो भी सेवा है वो ऐसी करो जो पुण्य जमा हो, यादगार हो। बाबा, जी बच्चा, ऐसे खुशानसीब बनो। मधुबन में आके थोड़ा समय भी रहना माना जो बाबा कराता है, वही

करना। कोई भी घड़ी ऐसी नहीं है जो मैं करता हूँ, मुझे करना है, इसी चिंतन में टाइम नहीं जाता है। मुझे करना है, मैं करता हूँ नहीं, यह शब्द कभी प्लीज़ नहीं कहना। टाइम वेस्ट नहीं करो। केयरफ्री दुआयें लेने वाले, बाबा के दिल पर बैठने वाले बनो। बाबा कहता है मुझे और कुछ नहीं चाहिए, सच्ची दिल चाहिए। शरीर में

आत्मा है, आत्मा के दिल में बाबा है। बाबा तो बाबा है, मैं बाबा के दिल में हूँ। अभी हरेक अपनी स्थिति ऐसी बनावे। हमें जो बाबा से इतना प्यार मिला है, उसमें ही हम डूबे रहें और भी हमको देख बाबा के प्यार में डूब जायें। सच्चाई का एक सिम्बल बन जायें। अच्छा। ओम् शान्ति।

दूसरा क्लास

## “अन्तिम समय की तैयारी - इधर उधर की बातें छोड़ शरीर से न्यारा रहने का अभ्यास करो”

(दादी जानकी)

आज आप सभी ने परदादी का यादगार आँखों से देखा, बाबा, मम्मा, दीदी, दादी का भी यादगार देखा अभी मेरा क्या होगा! मेरे को हमेशा आता है कि मेरा यादगार क्या होगा? याद में सेवा है, परन्तु आजकल सेवा में याद भूल जाती है। जब देखो सेवा, सेवा, सेवा...। हम सेवा करना नहीं जानती, याद में रहना जानती हूँ। जब तक चित्त में कोई और भी बात है तब तक बाप की याद नहीं होगी। अटेंशन प्लीज़, आज दादी को प्यार में यह गिफ्ट दो। सारी लाइफ के अन्दर हम लोगों ने आपस में कोई इधर की बात उधर, उधर की बात इधर कभी नहीं की होगी। स्टूडेन्ट लाइफ इज दी बेस्ट।

मन, चित्त में ऐसी कोई मीनिंग-लेस, अनावश्यक फालतू बातों के कारण शरीर भी ऐसा होता है जिसको कहा जाता है यह कर्मभोग है। बाबा की मुरली रोज़ कहती है मुझे याद करो यानी ऐसी याद में रहो जो विकर्म विनाश हों। ऐसा हेल्टी बनने का फिक्क किसी को है? उसके लिए बाबा कहते बीच-बीच में 5-10 मिनट भी टाइम निकालके अशरीरी रहने का अभ्यास करो। हमारा संगम का यह समय है ही शरीर में होते हुए न्यारा रहने का। और यह बहुत-बहुत सूक्ष्म बात है जितना सेवा करते देह, सम्बन्ध से न्यारे रहते हैं, उतना बाबा प्यार देता है। अगर बुद्धि और कहाँ अटकी, लटकी, चटकी होती है तो बाबा प्यार नहीं देता और न ही न्यारा बन सकते। अगर कोई अपने विचारों में, अपनी आइडिया में भी अटके तो वो बाबा को याद नहीं कर सकते हैं इसलिए अपने आपको जीते जी छुड़ाओ, अभी छुड़ाओ तब बड़ों का प्यार मिलता है। कोई कहता है बड़े हमको समझते नहीं हैं, इतना अभिमान है अपने आइडियाज़ का। जो वो कहे सो बड़े वही मानें, अभी यह जमाना है। तो अपने आपको ऐसे चलाने के लिए नहीं जीओ, जो वो कहे वो बड़े माने। पर बड़े किसको कहा जाता है?

ज्ञान का मंथन करके जो सुख पाया है वो कभी भूलता नहीं है। तो सारा दिन यही तात, लात, बात हो अब घर जाना है इसलिए कोई शरीर छोड़ता है तो यही गीत बजता है कि अब घर

जाना है...। अब घर जाना है यह सिर्फ कहेंगे नहीं, रहते ही घर में हैं। हम यहाँ क्या करते हैं? मुझे तो यहाँ कोई काम नहीं है, मैं फ्री बैठी हूँ। बाबा को, गुल्जार दादी को मैं कहती हूँ, अभी परदादी भी गई, अभी मुझे यहाँ क्या करना है? तो बाबा कहता है तुमको यहाँ रहना है, रहना है।

जिसे आपस में प्यार से मुस्कराना नहीं आता है वो मुश्किलताओं की बातें सुनाता है। कोई कहे यह बात नहीं हुई, अच्छा कोई बात नहीं, कोई हर्जा नहीं है, यह हमारे मुख पर नेचुरल आवे, तब हमारी यह जीवन यात्रा सफल कहेंगे। जब मैं किसी के मुख से यह शब्द सुनती हूँ कि मैं थक गई हूँ, तो मैं कहती हूँ यह बिचारे हैं, बिचारा कहा जाता है बकरे को, जो मैं मैं करता रहता है, उसे डर लगता है कोई मुझे कभी भी काट के खा लेगा।

तो हम कौन हैं? शिव-शक्ति पाण्डव सेना। इतना नशा चढ़ा हुआ हो तब 'निर्विघ्न स्थिति' और 'निर्विघ्न सेवा' होगी। निर्विघ्न सेवा तभी होगी जब ऐसी विघ्न-विनाशक निर्विघ्न स्थिति हो। एक हैं विघ्न डालने वाले, दूसरे हैं विघ्नों से डरने वाले, तीसरे हैं विघ्नों को खत्म करने वाले - मैं कौन? हमारे पूर्वज अभी तक भी विघ्नों को विनाश करने की सेवा कर रहे हैं। मेरा बाबा अभी भी इतना मेहरबान है जो हमने भूलें की हैं वो माफ कर देता है, क्षमा भी कर देता है और हमारे विकर्म भी विनाश कर देता है ताकि हम कर्मातीत, विकर्माजीत, सम्पूर्ण, सम्पन्न बनके सतयुगी राजाई लेने के अधिकारी बन सकें।

बाबा ने शरीर छोड़ा, मम्मा ने शरीर छोड़ा तब भी आँसू नहीं आया क्योंकि सतयुगी संस्कार अभी भर रहे हैं। ड्रामा की हर सीन बनी हुई है, वो साक्षी होके देख भी रहे हैं, प्ले भी कर रहे हैं। ड्रामा में जो एक्टर होते हैं वो एक्टर को नहीं देखते हैं, कोई किसी को देखेगा तो अपना पार्ट भूल जायेगा। स्टेज पर कई एक्टर होते हैं सब अपना-अपना एक्ट करके जाते हैं। अगर हम दूसरे एक्टर की एक्ट देखेंगे, उनके बारे में सोचेंगे तो मैं क्या करूँगी? तो अन्दरूनी सूक्ष्म मेरा क्रियेटर, डायरेक्टर मुझे देख

रहा है, यह अपना पार्ट कैसे प्ले करती है? इसलिए अभी सूक्ष्म पुरुषार्थ करो क्योंकि बाबा की यही चाहना है कि हम बाप समान बनें। बाप समान बनने के लिए सदा बाबा को सामने देखो। इसके लिए इगो और अटैचमेन्ट से फ्री हो जाओ।

मुरली कानों से सुनना, मुख से सुनाना इसलिए नहीं है। जो सुना है उसका मनन, चिंतन, मंथन करके गहराई में जाके सिमरण करो। इसके बीच कोई ऐसा व्यर्थ संकल्प, बोल, कर्म... हुआ तो मेरे को क्या बनायेगा? बाबा के दिनों में कभी कोई उदास होता था तो बाबा कहता था यह दास दासी बनेगा। आवाज़ में भारीपन या फीलिंग ऐसी जैसे कोई बहुत बड़ी बात हो गई हो। कोई हैं जो राई जितनी बात को पहाड़ बना देते हैं, यानि छोटी बात को बड़ी-बड़ी बात बनाके सुनाते हैं और कोई पहाड़ जैसी बात को भी राई यानि छोटी बना देते हैं। तो बाबा को कैसे बच्चे चाहिए? जो बड़ी

बात को छोटा कर देवे और सचमुच कोई बड़ी बात नहीं है क्योंकि बाबा बैठा है। प्रैक्टिकली बाबा ने यह सारी रचना रची है, पालना की है। तो हम सिर्फ प्राप्ति को देख आपस में प्यार से चलें तो अच्छा है। कोई कहे मैं तो इसके साथ नहीं चल सकती, यह मेरे साथ नहीं रह सकता, ऐसी भाषा बोली तो न हम किसी के साथ चल सकेंगे, न कोई मेरे साथ चल सकेगा। फिर कहाँ जायेंगे? जब शरीर छोड़ेंगे वही बातें याद आयेंगी, तो अभी शरीर छोड़ने की तैयारी कर दो। मैं तो रोज़ सुबह शाम तैयारी करती हूँ क्योंकि मेरे को और कुछ काम नहीं है। मूलवतन में जाने के पहले मुझे बाबा के साथ सूक्ष्मवतन में रहना है। यहाँ इस स्थूलवतन में निमित्त मात्र जो बाबा कराता है वही करने के लिए हैं। एक बल एक भरोसे का दृढ़ संकल्प हो तो जो सोचा हो जाता है। अच्छा। ओम् शान्ति।

21-8-14

## “दादी प्रकाशमणि जी के साथ के अनुभव - दादी गुल्जार”

आज सभी के बुद्धि में हमारी बड़ी दादी जी हैं। तो दादी जी की विशेषतायें तो आपने बहुत सुनी, लेकिन हमने देखा कि दादी में वो विशेषता थी जो सभी को मिलाकर एक कर देती थी। भिन्न-भिन्न विचार तो होते हैं ना, लेकिन उन सबके विचारों को एक में मिलाके सबको खुश कर देती थी। और संगठन तो बड़ा था ही तो भिन्न-भिन्न संस्कार वाले संगठन में भी दादी हमेशा प्यार से मिलती, और यही कहती बाबा याद है? आपको बाबा याद है ना! भले कुछ भी देखो, करो, क्या भी हो लेकिन कराने वाला कौन? कहो मेरा बाबा। जब मेरापन लायेंगे तो याद नहीं भूलेगी। मेरे में अटेंशन बहुत जाता है, वह भी नेचुरल, तो अभी ऐसे मेरा बाबा, यह मेरा भूलना नहीं चाहिए। तो मेरा बाबा में जितना मेरापन लायेंगे उतना बाबा भूलेगा नहीं। हम जो और और कोशिश करते हैं, वो तो कर ही रहे हैं लेकिन मेरापन किसमें भी होता है वो आपेही याद आता है। तो मेरापन लाने से सहज याद आती है। तो मेरापन जो है वो याद दिलाता है। बाबा तो विश्व का बाबा है लेकिन मेरा भी है, मेरा है तो जितना मेरापन लायेंगे उतना मेरे की याद सहज आयेंगी।

**प्रश्न:-** दादी जी, याद का चार्ट अच्छा बनें उसकी कोई अच्छी युक्ति बताओ।

**उत्तर:-** जैसे और कोई प्रोग्राम बनाते हो तो याद आता है ना, तीन दिन का समझो प्रोग्राम बनाया है तो याद रहता है ना। ऐसे यह फिक्स करो मैं सुबह को ले करके रात तक कैसे याद करूँगी! भिन्न-भिन्न तरीके से याद करो तो चार्ट अच्छा हो जायेगा। मेरा

बाबा विश्व का बाबा सबके दिलों में विराजमान होने वाला बाबा, बाबा की महिमा तो बहुत है... तो याद के लिए विशेष टाइम मुकरर करो। जैसेकि खाने के पहले मैं यह याद करूँगी मेरा बाबा है, बाबा के साथ खाऊँगी, ऐसे अलग-अलग समय की दिनचर्या से बाबा का प्रोग्राम बना दो। इस समय मैं यह करूँगी, इस समय मैं बाबा से यह करूँगी, और वह करो, ऐसे 2-4 दिन करेंगे, तो वैसे याद नहीं भी आवे, लक्ष्य रखकर करने से याद आता है। तो मेरा बाबा है लेकिन मेरा बाबा क्या है, मेरे को कैसे साथ देगा, वो भी आ जायेगा। 24 घण्टे का साथी कौन? बाबा। बाबा से मिला क्या है और बाबा क्या है, यह स्मृति में होगा तो बाबा का प्यार आपको याद से ही मिलेगा।

**प्रश्न:-** जैसे बड़ी दादी जी सबको अपने साथ मिलाके चलते थे तो दादी जी का यह गुण हम सबने भी अनुभव किया लेकिन इसकी धारणा सब कैसे करें?

**उत्तर:-** जैसे दादी बाबा को सदा साथी बनाकर रही, बाबा में मेरापन अनुभव किया तो सब साथी बन गये। तो जितना बाबा में मेरापन लायेंगे उतना सब अपने लगेंगे। नहीं तो कहेंगे हमारा इन्हों से क्या है, मेरा तो बाबा है। तो मेरा बाबा तो है लेकिन मेरे बाबा के यह सब हैं, तो मेरे भी तो हैं।

बड़ी दादी की विशेषता यही थी कि बाबा के साथ-साथ सबसे प्यार करती थी, ऐसे नहीं सिर्फ बड़ों-बड़ों से करेगी लेकिन छोटों के ऊपर और ही ध्यान देगी। उनकी बात बहुत ध्यान से सुनती थी। क्या है, क्यों है, बैठने में देरी होगी... यह नहीं सोचेगी।

प्यार से बैठेगी, प्यार से सबकी बात सुनेगी। तो इससे सब मेरे हो ही जायेंगे। हमारा दिल का प्यार है ना। तो दादी का सबसे दिल का प्यार था। समझो किसको भी कोई बीमारी हो, या कोई भी प्रॉब्लम हो तो दादी वह सुन करके सहन नहीं कर सकती थी। उसको किसी न किसी रीति से मदद करती थी। समझाती थी, अगर नहीं समझते तो जिसकी वह सुनता उनको कहती तुम इनको समझाओ। मतलब छोड़ नहीं देती थी, कैसे भी करके किसी भी रीति से वो उसे ठीक करने का प्रयत्न करती। ऐसे नहीं कि अभी इसके पीछे मैं क्यों पड़ूँ! नहीं। छोटी हो या बड़ी सबके लिए कुछ न कुछ करेगी।

दादी जी के सामने कोई भी आता था तो उसकी नब्ज जान जाती थी, ज्ञान नहीं देती थी। उससे ऐसे प्यार से चलती थी, जैसे भाई बहन का प्यार होता इसलिए हर एक दादी को अपना समझता था और दादी की हर बात बहुत ध्यान से सुनता था। इसको कहते हैं दिल का प्यार। दादी कभी बाहर का प्यार नहीं करती थी। ऐसे नहीं निभाना ही है, भले कोई समान होते थे तो भी समझती थी यह मेरी सखी है। छोटी को समझती थी यह मेरी छोटी बहन है। दादी को कभी कोई समस्या सुनाता था तो दादी समझती थी यह मेरी समस्या है, कैसे भी करके उसकी समस्या हटाती थी। चलते हुए भी पूछेगी कैसे हो? तो वो समझेगी ना दादी मेरी है। नेचुरल है, चलते हुए अगर किसी से बार-बार पूछो ठीक हो, कैसे हो... तो वो क्या महसूस करेगा? जैसे यह मेरी है। ऐसे दादी बड़ी होते भी छोटों को अपने समान समझती थी।

**प्रश्न:-** बड़ी दादी में सेवा का बहुत उमंग रहता था तो सबमें सेवा का उमंग भरती थी, वो गुण अपने अन्दर हम कैसे लायें? सेवा का सदा उमंग रहे, यह गुण कैसे धारण करें?

**उत्तर:-** आप लोगों को सेवा करने का चांस है, कई जगह जाते हो सम्बन्ध में। अच्छा कम से कम सम्बन्धियों को तो जानते हो, सम्बन्ध कितना होता है, कोई दुकान पर जाते हो, उसको भी पर्चा तो दे दो। कोई न कोई रीति से उसको सन्देश तो दे दो। सन्देश देने में तो कोई मुश्किल नहीं है। वही आपका दिया हुआ सन्देश उसको समय पर याद आयेगा।

**प्रश्न:-** बड़ी दादी जी लव और लाँ का कैसे बैलेंस रखती थी, वो आप सुनाइये?

**उत्तर:-** दादी का सभी से प्यार भी था लेकिन सभी नियमों पर ठीक चले, इसके लिए बहुत प्यार से सबको समझाती थी। अगर दादी को कोई कहते यह मेरी प्रॉब्लम है। तो उसको खास समय देकर बुलाकरके बात करती थी। कभी कोई डिस्टर्ब होता तो दादी उसकी बातों को सुनती और उसका हल देती थी। सदा यही लक्ष्य रखती पहले डिस्टर्बेन्स को ठीक करना है। सेवा में अगर कोई डिस्टर्बेन्स है तो वह सेवा नहीं है। उसको पहले ठीक करना

ही है। तो दादी उसको कहती थी कि तुम डिस्टर्ब हो तो मैं भी डिस्टर्ब होंगी इसीलिए फौरन ही उसको मिटाती थी। कोई ऐसी बड़ी बात होती थी तो दादी उसको बुला करके भी एक दो को आपस में मिला देती थी। संगठन में तो छोटे बड़े सब प्रकार के थे। तो दादी मिलाने में बहुत होशियार थी। किसी न किसी तरीके से उसको मिलाके ही छोड़ती थी।

**प्रश्न:-** बड़ी दादी जी के साथ आप सबने मिल करके सेवायें की, आज सेवाओं का इतना विस्तार हो गया वो कैसे हुआ इतना तेजी से...? और आपने शुरू शुरू में सेवा के लिए बहुत त्याग किया, आपके समय में आप कैसे सेवा करते थे?

**उत्तर:-** समय को देख करके बाबा कहता था, अभी तुमको तीव्र बनना है, कर रही हो, ऐसे सेवा की महिमा भी करता था, कर रही हो, अच्छी कर रही हो लेकिन लोग बहुत हैं उस हिसाब से आपकी सेवा जो है वो और तेज होनी चाहिए। यह नहीं कहता था सेवा नहीं की है, लेकिन अभी और आगे बढ़ना है। तो फील नहीं होता था हमने नहीं सेवा की, अन्दर पश्चाताप होवे, वो नहीं होता था, खुशी होती थी दादी ने और ही हमको सर्विस दी।

हम शुरू शुरू में सन्देश सुनाने घरों में जाते थे तो वो नहीं सुनते थे तो हम पोस्ट बॉक्स में डालके आते थे। तो वो पढ़ेंगे तो सही। उनके हाथ में तो आया ना, तो किसी न किसी रीति से उसके साथी भी ढूँढते थे, कोई इनकी पहचान वाला हो तो अच्छा है। हमारे साथ कोई भाई (जगदीश भाई जैसे कोई न कोई) जरूर होता था तभी हम सेवा के लिए जाते थे। और भाई से बहन सन्देश देवे तो थोड़ा ठीक होता है। तो भाई हमको वी.आई.पी. से मिलाने थे, ले जाते थे और बताते भी थे कि ऐसे ऐसे सुनाओ, ऐसे करो तो हम सीखते जाते थे। और अपने मन का भी संकल्प होता है ना, मुझे इस आत्मा का कल्याण करना है। तो भले नहीं भी सुनने वाले होंगे लेकिन हमारे शुद्ध संकल्प से धीरे धीरे वो एन्टी भी बदल जाते हैं। हमने देखा ऐसे बहुत मिसाल हैं जो बिल्कुल गाली देते थे, शकल नहीं देखते थे, उसके प्रति भी अमृतवेले अगर शुभ संकल्प करते थे कि बाबा आपका यह बच्चा ऐसे वंचित रह जायेगा, हमको तरस पड़ता है। आप इस आत्मा को कुछ करो तो वो बदल जाते थे। और बदल सकते हैं, घर वाले भी कोई एन्टी हो तो उसमें भी हम बाबा को कहते थे। सभी के जो समाचार आते थे, बाबा को कोई कहता था, बाबा मेरा सम्बन्धी ऐसे है, तो बाबा कहता था सुबह को उठके उस आत्मा को पहले अमृतवेले के टाइम दृष्टि दो। शुभ भावना रखो उसके प्रति, भले नहीं सामने सुनता है लेकिन आप पहले पहले उसको सूक्ष्म में बुला करके भी शुभ भावना दो तो वो बदलता जायेगा ऐसे कई बदले हैं। अच्छा – ओम् शान्ति।

## दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

सतगुरु की आज्ञा ही हम ब्राह्मणों का पहला धर्म और कर्म है राम की कहानी से हम सबको दो लेसन सीखने को मिलते हैं:-

1. राम अर्थात् आज्ञाकारी, वफादार, फरमानबरदार।
2. राम अर्थात् त्यागी और तपस्वी। राम की महिमा इन्हीं 5 विशेषताओं के कारण गायी जाती है। पहले हम न्यारे राम की चर्चा करते फिर सामने जो सैमुल रूप में राम (ब्रह्मा बाबा) है उनकी चर्चा करते हैं।

न्यारे राम की हमें वह बातें याद आती-जब वह हमारे निश्चय को परखने के लिए कहते बच्चे,

- \* आज मैं तुम्हें कहूँ तुम समुद्र में कूद जाओ तो कूदोगे या पूछोगे क्यों कूदूँ?
- \* मैं तुम्हें आज्ञा करूँ तुम अपने लौकिक घर में चले जाओ तो जाओगे या पूछोगे-क्यों?
- \* फिर यह भी कहता घर में जाओगे या दर पर बैठ जाओगे? क्योंकि यह भी तो वायदा है ना मरेंगे, जियेंगे तेरे द्वार पर...
- \* बच्चे, आज तुम्हें क्वीन एलिजाबेथ कहे तुम मेरा तख्त लो तो तुम बाप को छोड़कर उसका तख्त लोगे?

ऐसे बाबा अनेक सवाल हम बच्चों से पूछते और जो उनमें विजयी बनता बाबा उन्हें कहता यह है राम को जीतने वाला लव कुश बच्चा।

निश्चयबुद्धि कभी भी क्यों का प्रश्न नहीं उठायेंगे। कहेंगे जो आज्ञा। बाबा अगर हमें समुद्र के तले में भेजेगा भी तो मैं विजय पाकर बाबा की गोदी में जाऊंगी। अगर हमें समुद्र के तले में भेजता है तो सम्भालेगा भी खुद। मेरा फर्ज है आज्ञा पालन करना, जो भी आज्ञा करे। सतगुरु की आज्ञा मानी माथे। हम आदि से लेकर हमेशा समझती हूँ-सतगुरु की आज्ञा ही मेरे जीवन का पहला-पहला धर्म और कर्म है। आज्ञा एक तरफ है, माया दूसरे तरफ है। जो आज्ञा को पालन करेगा उसे पहाड़ों से भी जरूर टकराना पड़ेगा। जीवन का फर्स्ट संकल्प है मुझे आज्ञा पालन करनी है। इस संकल्प के आगे पहाड़ आयेंगे, माया आयेगी परन्तु मैं अटल रहूँ। तो निश्चयबुद्धि विजयी अवश्य होंगे।

सबसे न्यारे राम की जो भी आज्ञायें हैं वही मेरा सत धर्म है। धरत परिये धर्म न छोड़िये। धर्म माना मैं ब्राह्मण कुल की हूँ, जिस धर्म की, जिस कुल की हूँ उनकी मर्यादाओं पर चलना मेरा फर्ज है। मेरा धर्म है ब्राह्मण कुल की लाज रखना। कुल की लाज माना ईश्वरीय मर्यादाओं में चलना। जब हमें आज्ञाओं को पालन करना है तो आज्ञा है तुम्हें त्यागी रहना है। फिर मैं किसी चीज की इच्छा क्यों करूँ? त्यागी माना एटू जेड त्याग। आहार, व्यवहार, विचार, संकल्प, संस्कार, कामना, भावना सबका त्याग। शास्त्रों में दिखाते हैं कि राम को यह संकल्प भी नहीं आया कि मेरा राजतख्त भरत को क्यों मिले। उसे बाप की आज्ञा मिली कि तुम्हें वनवास में जाना है, तपस्या करनी है तो उसने राजाई की, घर की किसी

बात की परवाह नहीं की। त्याग की शक्ति के कारण ही 14 वर्ष वन में रहा। यह भी हिस्ट्री दिखाई है ना। तो हमारे भी योग के तपस्या की सफलता का आधार है त्याग। जितना त्यागमूर्त बनते उतना सफल होते। कई कहते हैं मेरे योग की स्थिति अच्छी नहीं है-कारण क्या? जरूर कोई न कोई अन्दर में आश होती, चाहे मान की, चाहे शान की, चाहे सेवा की। जहाँ आशा है वहाँ निराशा भी जरूर उत्पन्न होती है। सेवा मेरे जीवन का स्वधर्म है यह तो राइट। परन्तु ईर्ष्या में आकर - इसे सेवा मिलती, मुझे क्यों नहीं, इसको गांव-गांव में सेवा करने का चांस क्यों मिलता, क्या मैं नहीं कर सकता, अगर ऐसी आशा है तो निराशा में जरूर परिवर्तित होगी। फिर स्थिति खराब हो जाती है तो यह भी आज्ञा का उल्लंघन हुआ इसलिए सेवा और त्याग दोनों का बैलेन्स चाहिए। जहाँ मान की, महिमा सुनने की इच्छा है वहाँ खुशी और उमंग नहीं रह सकता। इससे सफलता नहीं मिलती, फिर खुशी भी गायब हो जाती है।

मेरा दिल कहता है मैं खूब सेवा करूँ, मैं जो चाहता हूँ वह नहीं होता तो मुझे बड़ा जोश आता है, यह कौन सी स्थिति बनाई? जहाँ स्व स्थिति का बैलेन्स नीचे जाता तो समझो किसी न किसी आज्ञा का उल्लंघन है। स्व स्थिति ठीक तभी रहेगी जब आज्ञाकारी बनेंगे।

राम के त्याग और आज्ञा पालन का ही गायन है। राम ने किसी के रोने पर, मना करने पर भी बाप की आज्ञा को महत्व दिया। आज्ञा मिली वनवास में जाना है तो किसी भी दूसरे के मना करते भी आज्ञा पर अटल रहा। तो आप भी बाबा की मिली हुई आज्ञाओं पर अटल रहो भले कोई कुछ भी करे।

यदि मुझे अपने संस्कार माथा गर्म करते तो डोन्टकेयर। मन्सा की परवाह नहीं करो, संस्कारों का वर्णन नहीं करो। वाचा-कर्मणा में कभी न आओ तो माया आपेही नमस्कार करेगी। संस्कार भी खत्म हो जायेंगे। आप अपनी मन्मनाभव की मस्ती में रहो तो वह आपेही भाग जायेंगे। अपनी शक्ति को सोच-सोच कर खत्म नहीं करो तो उसकी शक्ति खत्म हो जायेगी। जो होता है, होने दो, आप मन्सा की चिंता नहीं करो। मन्सा को पावरफुल बनाते जाओ, बाबा में लगाओ। जब उस मस्ती में चले जायेंगे तो व्यर्थ की बातें आपेही खत्म हो जायेंगी। मेरा तो एक बाबा... इसी दवा से सब बातें दब जायेंगी। यह नयन बाबा को देखने के लिए हैं, यह कान बाबा की बातें सुनने के लिए हैं। दूसरे को देखने सुनने के लिए नहीं। मुझे सतगुरु की आज्ञा पर चलना है। सम्मुख बाबा को देखो, उनके संग में रहो। वृत्तियां खराब होती हैं-संगदोष के कारण। आप न्यारे राम के साथ न्यारे रहो। मिठे बाबा की याद ही फुल एयरकन्डीशन है, जिससे अन्दर की गर्मी एक सेकण्ड में शीतल हो जाती है, संस्कार समाप्त हो जाते हैं। अच्छा।